जय द्वारकाधीश

॥ श्रीदुर्गायै नमः ॥

Scanned by CamScanner

॥ अथ श्रीदुर्गासप्तशती ॥

श्रीललिता-सप्तशती पाठ-विधि

(१) आसन एवं आत्म-शोधन–अपने आसन के अग्र भाग में भूमि पर स-बिन्दु 'त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्र' का मण्डल बनाकर 'गन्ध-पुष्प' से उसका पूजन करें–ॐ आधार-शक्तये नमः।

(२) फिर उक्त मण्डल पर 'नमः' मन्त्र से जल छिड़कें और 'पञ्च-पात्र' रखकर 'ॐ' मन्त्र से उसके जल में 'गन्ध-पुष्प' छोड़कर, 'अंकुश-मुद्रा' द्वारा 'तीर्थों का आवाहन' करें। यथा–

ॐ गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति! नर्मदे सिन्धु कावेरि!, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

(३) भूतापसारण–इसके बाद 'फट्'-मन्त्र का ७ बार जप करते हुए 'श्वेत सर्षप' (सरसों) या 'अक्षत' हाथ में लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण कर उन्हें अपने चारों ओर बिखेर दें–

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भुवि संस्थिताः। ये भूता विघ्न-कर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

(४) आसन-शुद्धि–पहले आसन पर निम्न मन्त्र से 'गन्ध-पुष्प' छोड़ें–ॐ ह्रीं आधार-शक्तये कमलासनाय नमः। फिर आसन पर हाथ रखकर निम्न प्रकार से 'आसन-शोधन-मन्त्र' हेतु 'न्यास' करें। यथा–

विनियोग–ॐ अस्य आसन-शोधन-मन्त्रस्य मेरु-पृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनोपवेशने विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–मेरुपृष्ठ-ऋषये नमः शिरसि, सुतलं-छन्दसे नमः मुखे, कूर्म-देवतायै नमः हृदि, आसनोपवेशने विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

उक्त प्रकार से 'न्यास' करने के बाद हाथ जोड़कर 'प्रार्थना' करें। यथा–

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका, देवि! त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां नित्यं, पवित्रं कुरु चासनम् ।।

(५) इसके बाद निम्न-लिखित चार मन्त्रों द्वारा 'आत्म-शोधन' करें। यथा–

ॐ ऐं आत्म-तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा । ॐ ह्रीं विद्या-तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।। ॐ क्लीं शिव-तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्व-तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।।

(६) गुरु-पूजन–'आत्म-शोधन' के पश्चात् 'प्राणायाम' करके अपने सम्मुख 'दीपक' प्रज्वलित कर 'गुरु-देव' का स्मरण करें। यथा–

ॐ आनन्दमानन्द-करं प्रसन्नं, ज्ञान-स्वरूपं निज-बोध-रूपम् ।
योगीन्द्रमीड्यं भव-रोग-वैद्यं, श्रीमद्-गुरुं नित्यमऽहं नमामि।।

उक्त प्रकार ध्यान करके 'मानसोपचारों' द्वारा 'गुरु-पूजन' करें। यथा–

ॐ गुं गुरुभ्यो नमः लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि। ॐ गुं गुरुभ्यो नमः हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। ॐ गुं गुरुभ्यो नमः यं वाय्वात्मकं धूपं घ्रापयामि। ॐ गुं गुरुभ्यो नमः रं वह्न्यात्मकं दीपं सन्दर्शयामि। ॐ गुं गुरुभ्यो नमः वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि। ॐ गुं गुरुभ्यो नमः सं सर्वात्मकं ताम्बूलं कल्पयामि।।

(७) गणेश-पूजन–इसके बाद 'गणपति' का पूजन करें–

ॐ गजाननं भूत-गणाधि-सेवितं, कपित्थ-जम्बू-फल-चारु-भक्षणम् ।
उमा-सुतं शोक-विनाश-कारकं, नमामि विघ्नेश्वर-पाद-पङ्कजम् ।।

ॐ वक्र-तुण्ड! महा-काय!, सूर्य-कोटि-सम-प्रभ!। निर्विघ्नं कुरु मे देव!, सर्व-कार्येषु सर्वदा।।

जय द्वारकाधीश

Scanned by CamScanner

(८) सङ्कल्प–इसके पश्चात् अपने अभीष्ट कर्म के अनुसार 'सङ्कल्प' करें। यथा–

'दाहिने हाथ' में कुश, तिल, तुलसी, हरीतकी–फल (हल्दी की गाँठ) और 'पञ्च–पात्र' से जल लेकर, दाएँ घुटने के बल, उत्तर की ओर मुख करके बैठे और निम्न प्रकार से त्रि–कूटों (पञ्चदशी–मन्त्र) से सम्पुटित 'श्रीदुर्गा–सप्तशती' के पाठ करने का सङ्कल्प करें। यथा–

ॐ तत् सत् (ब्रह्म ही एक–मात्र सत्य है), अद्यैतस्य (आज इस), ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय–प्रहरार्द्धे (ब्रह्मा के प्रथम दिवस के दूसरे पहर में), श्रीश्वेत–वराह–कल्पे (श्रीश्वेत–वराह नामक कल्प में), जम्बू–द्वीपे (जम्बू नामक द्वीप में), भरत–खण्डे (भरत के भू–खण्ड में), आर्यावर्त्त–देशे (आर्यावर्त नामक देश में), अमुक पुण्य–क्षेत्रे (अमुक पवित्र क्षेत्र में), अमुक–प्रदेशे (अमुक प्रदेश में), अमुक–जनपदे (अमुक जिले में), अमुक–स्थाने (अमुक स्थान में), अमुक–संवत्सरे (अमुक संवत्सर में), अमुक–मासे (अमुक मास में), अमुक–पक्षे (अमुक पक्ष में), अमुक–तिथौ (अमुक तिथि में), अमुक–वासरे (अमुक दिवस में), अमुक–गोत्रोत्पन्नो (अमुक गोत्र में उत्पन्न), अमुक–नाम–शर्मा–वर्मा–दास (अमुक नामवाला शर्मा, वर्मा, दास), जगज्जननी आदि–विद्या श्रीललिता–त्रिपुर–सुन्दरी–महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वती–देवता–प्रीति–पूर्वक सर्वाभीष्ट–सिद्धयर्थं (जगज्जननी आदि–विद्या श्रीललिता–त्रिपुर–सुन्दरी–महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वती की प्रसन्नता–पूर्वक सभी कामनाओं के सिद्धि के लिए), त्रि–कूट–पञ्च–दशी–मनुना–सम्पुटित श्रीचण्डी–पाठं सभक्त्याऽहं करिष्ये (त्रि–कूट–पञ्च–दशी–मन्त्र–सम्पुटित श्रीचण्डी–पाठ का मैं भक्ति–पूर्वक पाठ करूँगा)।

(९) त्रि–कूट–पञ्च–दशी–मन्त्र का विनियोगादि–उक्त प्रकार से सङ्कल्प करने के बाद त्रि–कूट–पञ्च–दशी–मन्त्र का विनियोगादि करना चाहिए। यथा–

विनियोग–ॐ अस्य श्रीललिता–महा–त्रिपुर–सुन्दरी–मन्त्रस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिः छन्दः, श्रीललिता–त्रिपुर–सुन्दरी देवता, ऐं 'क–ए–ई–ल–ह्रीं' बीजं, सौः 'स–क–ल–ह्रीं' शक्तिः, क्लीं 'ह–स–क–ह–ल–ह्रीं' कीलकं, सर्वाभीष्ट–सिद्धयर्थे चतुर्वर्गाप्तये च जपे विनियोगः।

ऋष्यादि–न्यास–शिरसि श्रीदक्षिणामूर्ति–ऋषये नमः, मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः, हृदि श्रीललिता–त्रिपुर–सुन्दरी–देवतायै नमः, गुह्ये ऐं 'क–ए–ई–ल–ह्रीं'–बीजाय नमः, पादयोः सौः 'स–क–ल–ह्रीं'–शक्तये नमः, सर्वाङ्गे क्लीं 'ह–स–क–ह–ल–ह्रीं' कीलकाय नमः, सर्वाभीष्ट–सिद्धयर्थे चतुर्वर्गाप्तये च जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्ग–न्यास–ऐं 'क–ए–ई–ल–ह्रीं' अंगुष्ठाभ्यां नमः, क्लीं 'ह–स–क–ह–ल–ह्रीं' तर्जनीभ्यां नमः, सौः 'स–क–ल–ह्रीं' मध्यमाभ्यां नमः, ऐं 'क–ए–ई–ल–ह्रीं' अनामिकाभ्यां नमः, क्लीं 'ह–स–क–ह–ल–ह्रीं' कनिष्ठाभ्यां नमः, सौः 'स–क–ल–ह्रीं' करतल–कर–पृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग–न्यास– ऐं 'क–ए–ई–ल–ह्रीं' हृदयाय नमः, क्लीं 'ह–स–क–ह–ल–ह्रीं' शिरसे स्वाहा, सौः 'स–क–ल–ह्रीं' शिखायै वषट्, ऐं 'क–ए–ई–ल–ह्रीं' कवचाय हुम्, क्लीं 'ह–स–क–ह–ल–ह्रीं' नेत्र–त्रयाय वौषट्, सौः 'स–क–ल–ह्रीं' अस्त्राय फट्।

ध्यान–विनियोगादि करने के बाद जगज्जननी भगवती श्रीललिता का ध्यान करना चाहिए–

चतुर्भुजे चन्द्र–कलावतंसे, कुचोन्नते! कुंकुम–राग–शोणे!।
पुण्ड्रेक्षु–पाशांकुश–पुष्प–बाण–हस्ते! नमस्ते जगदेक–मातः!।।१
कुंकुम – पङ्क – समाभामंकुश – पाशेक्षु – कुसुम – शरम्।
पङ्कज–मध्य–निषण्णां पङ्केरुह–लोचनां परां वन्दे।।२

मानस–पूजन–उक्त प्रकार से ध्यान करने के बाद भगवती श्रीललिता का मानसिक पूजन करना चाहिए। यथा–ॐ लं पृथ्वी तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीललिताम्बा–प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश–तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीललिताम्बा–प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु–तत्त्वात्मकं धूपं श्रीललिताम्बा–प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि–तत्त्वात्मकं दीपं श्रीललिताम्बा–प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जलं–तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीललिताम्बा–प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व–तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललिताम्बा–प्रीतये समर्पयामि नमः।

(१०) मन्त्र–जप–मानस–पूजन करने के बाद भगवती श्रीललिता के त्रि–कूटों (पञ्च–दशाक्षर मन्त्र) का जप अर्थ को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए।

मन्त्र–'क–ए–ई–ल–ह्रीं' (वाग्भव–कूट) 'ह–स–क–ह–ल–ह्रीं' (कामराज–कूट) 'स–क–ल–ह्रीं' (शक्ति–कूट)। (पन्द्रह अक्षर)।

जय द्वारकाधीश

Scanned by CamScanner

1- ब्रह्मा (क), झिण्टीश (ए),गोविन्द (इ),धरा (ल),माया (ह्रीं)
आकाश(ह) भृगु (स) चक्री (क) अभ्र (ह) मांस (ल), माया
(ह्रीं),हंस (स),धाता (क),क्षमा (ल) , माया (ह्रीं)

2- (काम) क,(योनि)ए ,(कमला) इ ,(वज्रपाणि- इन्द्र) ल ,(गुहा)
ह्रीं , ह,स -वर्ण ,(वायु) क,(अभ्र) ह ,(इन्द्र) ल ,(पुनः गुहा) ह्रीं, स क ल(वर्ण)
,ह्रीं (माया)

(११) सम्पुटित-पाठ–उक्त प्रकार से यथा-शक्ति 'जप' करने के बाद अपने सम्मुख पहले से प्रज्वलित 'दीपक' की ज्योति में आदि-विद्या भगवती श्रीललिता का ध्यान करते हुए, हाथ जोड़कर 'कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्० श्लोक पढ़ते हुए तीनों कूटों से सम्पुटित श्रीदुर्गा-सप्तशती के तेरह अध्यायों (७०० मन्त्रों) का पाठ करना चाहिए।

यदि एक दिन में सभी तेरह अध्यायों (७०० मन्त्रों) का 'पाठ' करना सम्भव न हो, तो 'पाठोऽर्थ वर-कारः'-सूत्रानुसार सात दिनों में तेरह अध्यायों (७०० मन्त्रों) का 'पाठ' करना चाहिए।

'पाठ' की समाप्ति के बाद एक बार पुनः 'त्रि-कूट-पञ्च-दशी-मन्त्र का विनियोगादि' कर यथा-शक्ति 'जप' करना चाहिए तथा 'क्षमा-प्रार्थना' एवं 'पाठ-समर्पण' करना चाहिए।

प्रथमोऽध्यायः

। ध्यानम् ।

कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ॐ ऐं मार्कण्डेय उवाच ॥ १ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।
निशामय तदुत्पत्तिं विस्तराद्गदतो मम ॥ २ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः।
स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः ॥ ३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः।
सुरथो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले ॥ ४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान्।
बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा ॥ ५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्य तैरभवद् युद्धमतिप्रबलदण्डिनः।
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः ॥ ६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत् ।
आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः ॥ ७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः ।
कोशो बलं चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥ ८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततो मृगयाव्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः ।
एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम् ॥ ९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स तत्राश्रममद्राक्षीद्द्विजवर्यस्य मेधसः ।
प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम् ॥ १० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्थौ कञ्चित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः ।
इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन् मुनिवराश्रमे ॥ ११ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टमानसः।
मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत्॥ १२॥

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा।
न जाने स प्रधानो मे शूरो हस्ती सदामदः॥ १३॥

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते।
ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः॥ १४॥

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्।
असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम्॥ १५॥

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयं कोशो गमिष्यति ।
एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः ॥ १६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः ।
स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः ॥ १७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे ।
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् ॥ १८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम् ॥ १९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वैश्य उवाच ॥ २० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले ॥ २१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः ।
विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम् ॥ २२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः ।
सोऽहं न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम् ॥ २३ ॥

v क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः ।
किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम् ॥ २४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किं नु मे सुताः ॥ २५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

राजोवाच ॥ २६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः ॥ २७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम् ॥ २८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वैश्य उवाच ॥ २९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः ॥ ३० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः ।
यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः ॥ ३१ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

पतिस्वजनहार्दं च हार्दितेष्वेव मे मनः ।
किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥ ३२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु ।
तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते ॥ ३३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ॥ ३४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मार्कण्डेय उवाच ॥ ३५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ ॥ ३६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः ।
कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम् ॥ ३७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ ॥ ३८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

राजोवाच ॥ ३९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥ ४० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम ।
अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः ॥ ४२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति।
एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ ॥ ४३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ।
तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥ ४४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥ ४५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच ॥ ४६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे ॥ ४७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

विषयाश्च महाभाग यान्ति चैवं पृथक्पृथक्।
दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे ॥ ४८ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः ।
ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं तु ते न हि केवलम् ॥ ४९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः ।
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् ॥ ५० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः ।
ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ॥ ५१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कणमोक्षादृतान् मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा ।
मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति ॥ ५२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

लोभात् प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं न पश्यसि।
तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्ते निपातिताः॥ ५३॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा।
तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः॥ ५४॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत्
ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा॥ ५५॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।
तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम्॥ ५६॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।
सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी॥ ५७॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥ ५८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

राजोवाच ॥ ५९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान् ॥ ६० ॥

v क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज ।
यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा ॥ ६१ ॥

v क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर ॥ ६२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

ऋषिरुवाच ॥ ६३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ॥ ६४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम ।
देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा ॥ ६५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते ।
योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ॥ ६६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

आस्तीर्य शेषमभजत् कल्पान्ते भगवान् प्रभुः ।
तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ ॥ ६७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ ।
स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ॥ ६८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम् ।
तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयः स्थितः ॥ ६९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम् ।
विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥ ७० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ ७१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ब्रह्मोवाच ॥ ७२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥ ७३ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ।
अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्याविशेषतः ॥ ७४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत् सृज्यते जगत् ॥ ७५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

त्वयैतत् पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥ ७६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥ ७७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

महामोहा च भवती महादेवी महेश्वरी ।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ ७८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ॥ ७९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ ८० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ।
सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥ ८१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ।
यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥ ८२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया।
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्॥ ८३॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।
विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च॥ ८४॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्।
सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता॥ ८५॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ।
प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु॥ ८६॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ॥ ८७॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच ॥ ८८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥ ८९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ ।
नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ॥ ९० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः ।
उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः ॥ ९१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ ।
मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ ॥ ९२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ ।
समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः ॥ ९३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः ।
तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ॥ ९४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम् ॥ ९५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

श्रीभगवानुवाच ॥ ९६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ॥ ९७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मया ॥ ९८ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच ॥ ९९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत् ॥ १०० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः ।
आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥ १०१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच ॥ १०२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता ।
कृत्वा चक्रेण वै छिन्ने जघने शिरसी तयोः ॥ १०३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्।
प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ॥ १०४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

। ऐं ॐ ।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वन्दे श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्!
वन्दे जगन्मोहिनीम्!
वन्दे सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्!
वन्दे सर्व-परां शिवां श्रीराज-राजेश्वरीम्!

Scanned by CamScanner

द्वितीयोऽध्यायः

। ध्यानम् ।

कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ॐ ह्रीं ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा ।
महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे ॥ २ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम् ।
जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः ॥ ३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम् ।
पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ ॥ ४ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम् ।
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम् ॥ ५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च ।
अन्येषां चाधिकारान्स स्वयमेवाधितिष्ठति ॥ ६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि ।
विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥ ७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम् ।
शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ ८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः।
चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ ॥ ९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः।
निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शङ्करस्य च ॥ १० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः।
निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत ॥ ११ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम्।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् ॥ १२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा ॥ १३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम् ।
याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा ॥ १४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत् ।
वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः ॥ १५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा ।
वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥ १६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा ।
नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा ॥ १७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च ।
अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा ॥ १८ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम् ।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः ।
ततो देवा ददुस्तस्यै स्वानि स्वान्यायुधानि च ॥ १९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक् ।
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाट्य स्वचक्रतः ॥ २० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः ।
मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी ॥ २१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वज्रमिन्द्रः समुत्पाट्य कुलिशादमराधिपः ।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद्गजात् ॥ २२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ ।
प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥ २३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः ।
कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्यै चर्म च निर्मलम् ॥ २४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे ।
चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥ २५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु ।
नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥ २६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च ।
विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् ॥ २७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम्।
अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम्॥ २८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम्।
हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च॥ २९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः।
शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम्॥ ३० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्।
अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा॥ ३१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः॥ ३२ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्।
चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥ ३३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः।
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम् ॥ ३४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः।
दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥ ३५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः।
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥ ३६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः ।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा ॥ ३७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम् ।
क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम् ॥ ३८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद्व्याप्य संस्थिताम् ।
ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम् ॥ ३९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम् ।
महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥ ४० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः ।
रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः ॥ ४१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः।
पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः॥ ४२॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे।
गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः॥ ४३॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत।
बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः॥ ४४॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः।
अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः॥ ४५॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः।
कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा॥ ४६॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः।
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥ ४७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः।
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित् पाशांस्तथापरे ॥ ४८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः।
सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥ ४९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी।
अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः ॥ ५० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी ।
सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी ॥ ५१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः ।
निःश्वासान् मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका ॥ ५२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः ।
युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः ॥ ५३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः ।
अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खांस्तथापरे ॥ ५४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे ।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः ॥ ५५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान्।
पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान्॥ ५६॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत्।
केचिद् द्विधाकृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे॥ ५७॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते।
वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः॥ ५८॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि।
निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे॥ ५९॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

श्येनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः।
केषांचिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे॥ ६०॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः ।
विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ॥ ६१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधाकृताः ।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ॥ ६२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः ।
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥ ६३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः ।
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥ ६४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा ।
अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत् स महारणः ॥ ६५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः ।
मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् ॥ ६६ ॥

क एइलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं

क एइलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं

क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका ।
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम् ॥ ६७ ॥

क एइलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं

क एइलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं

स च सिंहो महानादमुत्सृजन् धुतकेसरः ।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥ ६८ ॥

क एइलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं

क एइलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं

देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं तथासुरैः ।
यथैषां तुतुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॥ ६९ ॥

क एइलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं

वन्दे श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्!
वन्दे जगन्मोहिनीम्!
वन्दे सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्!
वन्दे सर्व-परां शिवां श्रीराज-राजेश्वरीम्!

Scanned by CamScanner

तृतीयोऽध्यायः

कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः ।
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् ॥ २ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः ।
यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः ॥ ३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्य छित्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान् ।
जघान तुरगान्बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् ॥ ४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम् ।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः ॥ ५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सच्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः ।
अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः ॥ ६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि ।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥ ७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन ।
ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः ॥ ८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः ।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् ॥ ९ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत ।
तेन तच्छतधा नीतं शूलं स च महासुरः ॥ १० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ ।
आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः ॥ ११ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम् ।
हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ॥ १२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः ।
चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत् ॥ १३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः।
बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ॥ १४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

युध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ॥ १५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा।
करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक् कृतम् ॥ १६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः।
दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः ॥ १७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्।
बाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम् ॥ १८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम्।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥ १९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

बिडालस्यासिना कायात् पातयामास वै शिरः।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम् ॥ २० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः।
माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान् ॥ २१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्।
लाङ्गूलताडितांश्चान्यान् शृङ्गाभ्यां च विदारितान् ॥ २२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च ।
निःश्वासपवनेनान्यान्पातयामास भूतले ॥ २३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः ।
सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ॥ २४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः ।
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च ॥ २५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत ।
लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ॥ २६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः ।
श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ॥ २७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत्॥ २८॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे॥ २९॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः।
छिनत्ति तावत् पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत॥ ३०॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः।
तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः॥ ३१॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च।
कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत॥ ३२॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम्॥ ३३॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना॥ ३४॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान्॥ ३५॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सा च तान्प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः।
उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम्॥ ३६॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

देव्युवाच ॥ ३७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥ ३८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच ॥ ३९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एवमुक्त्वा समुत्पत्य सारूढा तं महासुरम्।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत्॥ ४० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः सोऽपि पदाक्रान्तस्तया निजमुखात्तदा।
अर्धनिष्क्रान्त एवासीद्देव्या वीर्येण संवृतः ॥ ४१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः॥ ४२॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं
क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत्।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः॥ ४३॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं
क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सहदिव्यैर्महर्षिभिः।
जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः॥ ४४॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वन्दे श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्!
वन्दे जगन्मोहिनीम्!
वन्दे सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्!
वन्दे सर्व-परां शिवां श्रीराज-राजेश्वरीम्!

Scanned by CamScanner

चतुर्थोऽध्यायः

कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या ।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ २ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निःशेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥ ३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥ ४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ ५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किंचातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि ।
किं चाहवेषु चरितानि तवाति यानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै-
र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥ ८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्वं
अभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः ।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै-
र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि ॥ ९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान-

मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम्।

देवि त्रयी भगवती भवभावनाय

वार्तासि सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ॥ १० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा

दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।

श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा

गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥ ११ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-

बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम्।

अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि

वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥ १२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल-
मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः।
प्राणान् मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥ १३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥ १४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति बन्धुवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥ १५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-

ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति।

स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती प्रसादा-

ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन॥ १६॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः

स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या

सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता॥ १७॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते

कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।

संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु

मत्वेति नूनमहितान्विनिहंसि देवि॥ १८॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ।
लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वहितेषुसाध्वी ॥ १९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥ २० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः ।
वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥ २१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥ २२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तम्
अस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥ २३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ २४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ २५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥ २६॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥ २७॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच॥ २८॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः॥ २९॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैः सुधूपिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान्॥ ३०॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देव्युवाच ॥ ३१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥ ३२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देवा ऊचुः ॥ ३३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते ॥ ३४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ।
यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि ॥ ३५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः।
यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥ ३६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्य वित्तर्द्धिविभवैर्धनदारादिसम्पदाम्।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ॥ ३७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच ॥ ३८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथात्मनः।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप ॥ ३९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी ॥ ४० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत्।
वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ४१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी।
तच्छृणुष्व मयाख्यातं यथावत्कथयामि ते ॥ ४२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

। ह्रीं ॐ ।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वन्दे श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्!
वन्दे जगन्मोहिनीम्!
वन्दे सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्!
वन्दे सर्व-परां शिवां श्रीराज-राजेश्वरीम्!

Scanned by CamScanner

पञ्चमोऽध्यायः

। ध्यानम् ।

कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ॐ क्लीं ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः ।
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात् ॥ २ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम् ।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च ॥ ३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च ।
ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः ॥ ४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः ।
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ॥ ५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तयास्माकं वरो दत्तो यथापत्सु स्मृताखिलाः ।
भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ॥ ६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम् ।
जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥ ७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देवा ऊचुः ॥ ८ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥ ९॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः॥ १०॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कल्याण्यै प्रणता वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥ ११॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः॥ १२॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः॥ १३॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता। नमस्तस्यै १४

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता। नमस्तस्यै १५

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता। नमस्तस्यै नमो नमः॥ १६

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते। नमस्तस्यै ॥ १७

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते। नमस्तस्यै ॥ १८

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १९

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ २०

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ २१

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २२

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ २३

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ २४

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २५

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ २६

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ २७

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २८

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ २९

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ३०

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३१

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ३२

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ३३

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३४

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ३५

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ३६

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३७

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ३८

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ३९

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४०

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ४१

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ४२

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥४३

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ४४

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ४५

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥४६

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ४७

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ४८

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥४९

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ५०

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ५१

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥५२

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ५३

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ५४

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५५

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ५६

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ५७

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥७८

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ७९

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ८०

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८१

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ८२

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ६३

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६४

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ६५

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ६६

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६७

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ६८

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ६९

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७०

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ७१

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ७२

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७३

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ७४

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै ॥ ७५

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७६

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्त्यै देव्यै नमो नमः ॥ ७७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्। नमस्तस्यै ॥ ७८

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्। नमस्तस्यै ॥ ७९

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत्। नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८०

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-

स्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी

शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ ८१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ८२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच ॥ ८३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एवं स्तवाभियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती ।
स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥ ८४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का ।
शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा ॥ ८५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

स्तोत्रं ममैतत्क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः।
देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः॥ ८६॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते॥ ८७॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती।
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया॥ ८८॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम्।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः॥ ८९॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता सातीव सुमनोहरा।
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम्॥ ९०॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम् ।
ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर ॥ ९१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा ।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति ॥ ९२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो ।
त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे ॥ ९३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात् ।
पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः ॥ ९४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे ।
रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम् ॥ ९५ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम्॥ ९६॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि तिष्ठति।
तथायं स्यन्दनवरो यः पुरासीत्प्रजापतेः॥ ९७॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता।
पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे॥ ९८॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः।
वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी॥ ९९॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते ।
स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥ १०० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच ॥ १०१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः ।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम् ॥ १०२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम ।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥ १०३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने ।
तां च देवीं ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ॥ १०४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

दूत उवाच ॥ १०५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः ।
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः ॥ १०६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु ।
निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ॥ १०७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः ।
यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् ॥ १०८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः ।
तथैव गजरत्नं च हृतं देवेन्द्रवाहनम् ॥ १०९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः।
उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम्॥ ११० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च।
रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने॥ १११ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम्॥ ११२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्।
भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः॥ ११३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात्।
एतद्बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज॥ ११४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच ॥ ११५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ॥ ११६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देव्युवाच ॥ ११७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम् ।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ॥ ११८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम् ।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥ ११९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति॥ १२०॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महाबलः।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु॥ १२१॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

दूत उवाच॥ १२२॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः।
त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः॥ १२३॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका॥ १२४॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे।
शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम्॥ १२५॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ।
केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि ॥ १२६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देव्युवाच ॥ १२७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चापितादृशः ।
किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा ॥ १२८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः ।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु यत् ॥ १२९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वन्दे श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्!
वन्दे जगन्मोहिनीम्!
वन्दे सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्!
वन्दे सर्व-परां शिवां श्रीराज-राजेश्वरीम्!

Scanned by CamScanner

षष्ठोऽध्यायः

कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः ।
समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ॥ २ ॥

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः ।
सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् ॥ ३ ॥

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः ।
तामानय बलाद्दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ ४ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः ।
स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा ॥ ५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच ॥ ६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः ।
वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ ॥ ७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम् ।
जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति ।
ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ ९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देव्युवाच ॥ १० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान्बलसंवृतः ।
बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम् ॥ ११ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच ॥ १२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः ।
हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका तदा ॥ १३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका।
ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः॥ १४॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम्।
पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः॥ १५॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कांश्चित्करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान्।
आक्रान्त्या चाधरेणान्यान् जघान स महासुरान्॥ १६॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

केषांचित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी।
तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान्पृथक्॥ १७॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः॥ १८॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना ।
तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना ॥ १९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम् ।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः ॥ २० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः ।
आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥ २१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ ।
तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥ २२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि बः संशयो युधि ।
तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् ॥ २३ ॥

Scanned by CamScanner

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते ।
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॥ २४ ॥

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वन्दे श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्!
वन्दे जगन्मोहिनीम्!
वन्दे सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्!
वन्दे सर्व-परां शिवां श्रीराज-राजेश्वरीम्!

Scanned by CamScanner

सप्तमोऽध्यायः

कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः ।
चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥ २ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम् ।
सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥ ३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः ।
आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः ॥ ४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन्प्रति ।
कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा ॥ ५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्द्रुतम् ।
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी ॥ ६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा ।
द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा ॥ ७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा ।
निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा ॥ ८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान्।
सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम्॥ ९॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहयोधघण्टासमन्वितान्।
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान्॥ १०॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह।
निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम्॥ ११॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्।
पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत्॥ १२॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः।
मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि॥ १३॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

बलिनां तद्बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्।
ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तदा ॥ १४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः।
जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा ॥ १५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क्षणेन तद्बलं सर्वमसुराणां निपातितम्।
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम्॥ १६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः।
छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः ॥ १७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम्।
बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम्॥ १८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी।
काली करालवदना दुर्दर्शदशनोज्ज्वला॥ १९॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत।
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत्॥ २०॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा॥ २१॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम्।
मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम्॥ २२॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च।
प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम्॥ २३॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू।
युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि ॥ २४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच ॥ २५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ।
उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः ॥ २६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवी भविष्यसि ॥ २७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वन्दे श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्!
वन्दे जगन्मोहिनीम्!
वन्दे सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्!
वन्दे सर्व-परां शिवां श्रीराज-राजेश्वरीम्!

Scanned by CamScanner

अष्टमोऽध्यायः

कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते ।
बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ॥ २ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान् ।
उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ॥ ३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः ।
कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः ॥ ४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै ।
शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥ ५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कालका दौर्हृदा मौर्वाः कालिकेयास्तथासुराः ।
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ॥ ६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः ।
निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः ॥ ७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम् ।
ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् ॥ ८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान्नृप ।
घण्टास्वनेन तान्नादानम्बिका चोपबृंहयत् ॥ ९ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा।
निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना ॥ १० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम्।
देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः ॥ ११ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम्।
भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥ १२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥ १३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

यस्य देवस्य यद्रूपं यथा भूषणवाहनम् ।
तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान्योद्धुमाययौ ॥ १४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः ।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणीत्यभिधीयते ॥ १५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी ।
महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा ॥ १६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना ।
योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी ॥ १७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता ।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥ १८ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः ।
शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम् ॥ १९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः ।
प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः ॥ २० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता ।
प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा ॥ २१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः ।
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याह चण्डिकाम् ॥ २२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा ।
चण्डिका शक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी ॥ २३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता ।
दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ २४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ ।
ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥ २५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः ।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥ २६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः ।
तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥ २७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्।
शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता ॥ २८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः।
अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता ॥ २९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः।
ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः ॥ ३० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान्।
चिच्छेद लीलयाध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः ॥ ३१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान्।
खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन्कुर्वती व्यचरत्तदा ॥ ३२ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः ।
ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून्येन येन स्म धावति ॥ ३३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी ।
दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना ॥ ३४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऐन्द्री कुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः ।
पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥ ३५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः ।
वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः ॥ ३६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

नखैर्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान्।
नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा॥ ३७॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः।
पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा॥ ३८॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान्।
दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः॥ ३९॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

पलायनपरान्दृष्ट्वा दैत्यान्मातृगणार्दितान्।
योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः॥ ४०॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः।
समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणो महासुरः॥ ४१॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः।
ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत्॥ ४२॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम्।
समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः॥ ४३॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः।
तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः॥ ४४॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः।
समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम्॥ ४५॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा।
ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः॥ ४६॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह।
गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम्॥ ४७॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः।
सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः॥ ४८॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना।
माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम्॥ ४९॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक्।
मातॄः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः॥ ५०॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि ।
पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥ ५१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत् ।
व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम् ॥ ५२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राहसत्वरम् ।
उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥ ५३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून् महासुरान् ।
रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना ॥ ५४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान् ।
एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥ ५५ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे।
इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम्॥ ५६॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्।
ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम्॥ ५७॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि।
तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम्॥ ५८॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति।
मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः॥ ५९॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्।
देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः ॥ ६० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम्।
स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः ॥ ६१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः।
ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप ॥ ६२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः ॥ ६३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वन्दे श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्!
वन्दे जगन्मोहिनीम्!
वन्दे सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्!
वन्दे सर्व-परां शिवां श्रीराज-राजेश्वरीम्!

Scanned by CamScanner

नवमोऽध्यायः

कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ॐ राजोवाच ॥ १ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम ।
देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् ॥ २ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते ।
चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः ॥ ३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच ॥ ४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते।
शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे॥ ५॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन्।
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया॥ ६॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः।
संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः॥ ७॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः।
निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः॥ ८॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततो युद्धमतीवासीद्देव्या शुम्भनिशुम्भयोः।
शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः॥ ९॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः।
ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥ १० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम्।
अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम्॥ ११ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम्।
निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम्॥ १२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः।
तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम्॥ १३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः।
आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत्॥ १४ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति ।
सापि देव्यास् त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता ॥ १५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम् ।
आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले ॥ १६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे ।
भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् ॥ १७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः ।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥ १८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत्।
ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम्॥ १९॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च।
समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना॥ २०॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः।
पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश॥ २१॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत्।
कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः॥ २२॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह।
वैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ॥ २३॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा।
तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः॥ २४॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा।
आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया॥ २५॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम्।
निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते॥ २६॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान्।
चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः॥ २७॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम्।
स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह॥ २८॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः ।
आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ॥ २९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः ।
चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम् ॥ ३० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी ।
चिच्छेद देवी चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान् ॥ ३१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम् ।
अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसैन्यसमावृतः ॥ ३२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका।
खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे ॥ ३३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम्।
हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका ॥ ३४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः।
महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन्॥ ३५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि ॥ ३६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः सिंहश्चखादोग्रदंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान्।
असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान्॥ ३७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः ।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥ ३८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे ।
वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि ॥ ३९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः ।
वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे ॥ ४० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात् ।
भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः ॥ ४१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वन्दे श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्!
वन्दे जगन्मोहिनीम्!
वन्दे सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्!
वन्दे सर्व-परां शिवां श्रीराज-राजेश्वरीम्!

Scanned by CamScanner

दशमोऽध्यायः

कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम् ।
हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥ २ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

बलावलेपदुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह ।
अन्यासां बलमाश्रित्य युद्धयसे चातिमानिनी ॥ ३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देव्युवाच ॥ ४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा ।
पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥ ५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम् ।
तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका ॥ ६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देव्युवाच ॥ ७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता ।
तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥ ८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच ॥ ९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः ।
पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम् ॥ १० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथा चास्त्रैः सुदारुणैः ।
तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयङ्करम् ॥ ११ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका ।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥ १२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी ।
बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः ॥ १३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः ।
सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥ १४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे ।
चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् ॥ १५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत् ।
अभ्यधा वत तां देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः ॥ १६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका ।
धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम् ।
अश्वांश्च पातयामास रथं सारथिना सह ॥ १७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः ।
जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः ॥ १८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः ।
तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥ १९ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः ।
देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत् ॥ २० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले ।
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः ॥ २१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः ।
तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका ॥ २२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम् ।
चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥ २३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह ।
उत्पाट्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ॥ २४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ।
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया ॥ २५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम् ।
जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥ २६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स गतासुः पपातोर्व्यां देवी शूलाग्रविक्षतः ।
चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥ २७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि ।
जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः ॥ २८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः।
सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते ॥ २९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः।
बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः ॥ ३० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः।
ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥ ३१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः ॥ ३२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वन्दे श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्!
वन्दे जगन्मोहिनीम्!
वन्दे सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्!
वन्दे सर्व-परां शिवां श्रीराज-राजेश्वरीम्!

Scanned by CamScanner

एकादशोऽध्यायः

कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे
सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम् ।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्
विकाशिवक्त्राब्जविकाशिताशाः ॥ २ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥ ३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

आधारभूता जगतस्त्वमेका
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि ।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत-
दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये ॥ ४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

त्वं वैष्णवीशक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥ ५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः ॥ ६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सर्वभूता यदा देवी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥ ७ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते ।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि ।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि ।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ११ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि ।
कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि ।
माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तुते ॥ १४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे ।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे ।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १७ ॥

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे ।
त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १८ ॥

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले ।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १९ ॥

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले ।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २० ॥

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे ।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २१ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे ।
महारात्रि महामाये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि ।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तुते ॥ २३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ २४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ।
पातु नः सर्वभूतेभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ २५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते॥ २६॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव॥ २७॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्॥ २८॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥ २९॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य
धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधात्ममूर्तिं
कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या॥ ३०॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे-
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम्॥ ३१॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्॥ ३२॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीह विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः॥ ३३॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-
र्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः ।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् ॥ ३४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि ।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव ॥ ३५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देव्युवाच ॥ ३६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम् ॥ ३७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

देवा ऊचुः ॥ ३८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ ३९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देव्युवाच ॥ ४० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे ।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ॥४१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा ।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ॥ ४२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले ।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांश्च दानवान् ॥ ४३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान् महासुरान् ।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः ॥ ४४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः ।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् ॥ ४५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि ।
मुनिभिः संस्मृता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा ॥ ४६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्याम्यहं मुनीन् ।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ॥ ४७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः ।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः ॥ ४८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि ।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ॥४९॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥ ५० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात् ।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः ॥ ५१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भीमादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥ ५२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वासंख्येयषट्पदम्।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम्॥ ५३॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति॥ ५४॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम्॥ ५५॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वन्दे श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्!
वन्दे जगन्मोहिनीम्!
वन्दे सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्!
वन्दे सर्व-परां शिवां श्रीराज-राजेश्वरीम्!

Scanned by CamScanner

द्वादशोऽध्यायः

कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ॐ देव्युवाच ॥ १ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः ।
तस्याहं सकलां बाधां शमयिष्याम्यसंशयम् ॥ २ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम् ।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद्वधं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः ।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥ ४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद्दुष्कृतोत्था न चापदः।
भविष्यंति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम्॥ ५॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शत्रुभ्यो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः।
न शस्त्रानलतोयौघात् कदाचित् सम्भविष्यति॥ ६॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं महत्॥ ७॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान्।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम॥ ८॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम।
सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम्॥ ९॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे ।
सर्वं ममैतन्माहात्म्यम् उच्चार्यं श्राव्यमेव च ॥ १० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

जानताजानता वापि बलिपूजां यथा कृताम् ।
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथाकृतम् ॥ ११ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी ।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥ १२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसमन्वितः ।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥ १३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः ।
पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् ॥ १४ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते।
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम्॥ १५॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने।
ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम॥ १६॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते॥ १७॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम्।
संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम्॥ १८॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम्॥ १९॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम्। ॥ २० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः
विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम्। ॥ २१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या
प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृदुच्चरिते श्रुते ॥ २२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

श्रुतं हरति पापानि तथारोग्यं प्रयच्छति
रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम ॥ २३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम्

तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते। ॥ २४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः

ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्तु शुभां मांतम्।॥ २५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः

दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः। ॥ २६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः

राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा। ॥ २७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे

पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे। ॥ २८ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा

स्मरन् ममैतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात् । ॥ २९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा

दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम ॥ ३० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ऋषिरुवाच ॥ ३१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा ॥ ३२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

पश्यतां सर्वदेवानां तत्रैवान्तरधीयत ।

तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान्यथा पुरा ॥ ३३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः ।
दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ॥ ३४ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

जगद्विध्वंसके तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे ।
निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः ॥ ३५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः ।
सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥ ३६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते ।
सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति ॥ ३७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर ।
महादेव्या महाकाली महामारीस्वरूपया ॥ ३८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा ।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी ॥ ३९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे ।
सैवाभावे तथालक्ष्मीर्विनाशायोपजायते ॥ ४० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्गन्धधूपादिभिस्तथा ।
ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम् ॥ ४१ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वन्दे श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्!
वन्दे जगन्मोहिनीम्!
वन्दे सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्!
वन्दे सर्व-परां शिवां श्रीराज-राजेश्वरीम्!

Scanned by CamScanner

त्रयोदशोऽध्यायः

कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ।
एवंप्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत् ॥ २ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया ।
तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ॥ ३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे ।
तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् ॥ ४ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा ॥ ५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मार्कण्डेय उवाच ॥ ६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः ॥ ७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं संशितव्रतम् ।
निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥ ८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने ।
संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनमास्थितः ॥ ९ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन्।
तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम्॥ १० ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः।
निराहारौ यतात्मानौ तन्मनस्कौ समाहितौ॥ ११ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम्।
एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः॥ १२ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका॥ १३ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

देव्युवाच॥ १४ ॥

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन ।
मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामिते ॥ १५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मार्कण्डेय उवाच ॥ १६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि ।
अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ॥ १७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः ।
ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम् ॥ १८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

देव्युवाच ॥ १९ ॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ॥ २० ॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति ॥ २१ ॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ॥ २२ ॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

सावर्णिको मनुर्नाम भवान्भुवि भविष्यति ॥ २३ ॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः ॥ २४ ॥

क एइ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति ॥ २५ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

मार्कण्डेय उवाच ॥ २६ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम् ।
बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता ॥ २७ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥ २८ ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम् ।
बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता ॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

Scanned by CamScanner

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः।
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः॥

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

। क्लीं ॐ ।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं

वन्दे श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्!
वन्दे जगन्मोहिनीम्!
वन्दे सकल-सौभाग्य-प्रदां सुन्दरीम्!
वन्दे सर्व-परां शिवां श्रीराज-राजेश्वरीम्!

Scanned by CamScanner

विनियोग–ॐ अस्य श्रीललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-मन्त्रस्य श्रीदक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिः छन्दः, श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी देवता, ऐं 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' बीजं, सौः 'स-क-ल-ह्रीं' शक्तिः, क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' कीलकं, सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे चतुर्वर्गाप्तये च जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–शिरसि श्रीदक्षिणामूर्ति-ऋषये नमः, मुखे पंक्तिश्छन्दसे नमः, हृदि श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-देवतायै नमः, गुह्ये ऐं 'क-ए-ई-ल-ह्रीं'-बीजाय नमः, पादयोः सौः 'स-क-ल-ह्रीं'-शक्तये नमः, सर्वाङ्गे क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' कीलकाय नमः, सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे चतुर्वर्गाप्तये च जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कराङ्ग-न्यास–ऐं 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' अंगुष्ठाभ्यां नमः, क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' तर्जनीभ्यां नमः, सौः 'स-क-ल-ह्रीं' मध्यमाभ्यां नमः, ऐं 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' अनामिकाभ्यां नमः, क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' कनिष्ठाभ्यां नमः, सौः 'स-क-ल-ह्रीं' करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास–ऐं 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' हृदयाय नमः, क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' शिरसे स्वाहा, सौः 'स-क-ल-ह्रीं' शिखायै वषट्, ऐं 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' कवचाय हुम्, क्लीं 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' नेत्र-त्रयाय वौषट्, सौः 'स-क-ल-ह्रीं' अस्त्राय फट्।

ध्यान–विनियोगादि करने के बाद जगज्जननी भगवती श्रीललिता का ध्यान करना चाहिए–

चतुर्भुजे चन्द्र-कलावतंसे, कुचोन्नते! कुंकुम-राग-शोणे।
पुण्ड्रेक्षु-पाशांकुश-पुष्प-बाण-हस्ते! नमस्ते जगदेक-मातः!।।१
कुंकुम - पङ्क - समाभामंकुश - पाशेक्षु - कुसुम - शरम्।
पङ्कज-मध्य-निषण्णां पङ्केरुह-लोचनां परां वन्दे।।२

मानस-पूजन–उक्त प्रकार से ध्यान करने के बाद भगवती श्रीललिता का मानसिक पूजन करना चाहिए। यथा–ॐ लं पृथ्वी तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीललिताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीललिताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीललिताम्बा-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीललिताम्बा-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जलं-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीललिताम्बा-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललिताम्बा-प्रीतये समर्पयामि नमः।

(१०) मन्त्र-जप–मानस-पूजन करने के बाद भगवती श्रीललिता के त्रि-कूटों (पञ्च-दशाक्षर मन्त्र) का जप अर्थ को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए।

मन्त्र–'क-ए-ई-ल-ह्रीं' (वाग्भव-कूट) 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' (कामराज-कूट) 'स-क-ल-ह्रीं' (शक्ति-कूट)। (पन्द्रह अक्षर)।

\

Scanned by CamScanner